RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 June 2020, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd June 2020

मासिक पत्रिका

अजायब ✿ बानी

वर्ष–अठारहवां | अंक–दूसरा | जून–2020

परोपकारी महात्मा 4

सच्चा शिष्य 23

गुफा दर्शन 5

सवाल–जवाब 27

नाम का मोती 11

धन्य अजायब 34

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस–1, नई दिल्ली–110 028 से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया। 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार – **गुरमेल सिंह नौरिया**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04

उप संपादक – **नन्दनी**
सहयोग – **परमजीत सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 219 Website : www.ajaibbani.org

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के द्वारा एक अनमोल वचन

परोपकारी महात्मा

सारी सृजन हार की, जाना नाहिं कोये।
कह जानन आपन धनी, या दास दिवानी होये।।

मालिक की गति को मालिक ही जानता है या वह महात्मा जानता है जिस पर परमात्मा की दया है। महात्मा परोपकारी बनकर इस संसार मंडल पर आते हैं।

इसी तरह एक महात्मा को परोपकारी कहते थे। उस महात्मा के नजदीक कुछ चोर रहते थे, उन चोरों ने सोचा देखें! यह महात्मा हमारी मदद करेगा? दो चोरों ने महात्मा के पास जाकर कहा, ''हमारा तीसरा साथी बीमार है, आप हमारे साथ चलकर हमारी मदद करें।'' अगर महात्मा इंकार करे तो वह परोपकारी नहीं कहलवा सकता था।

वे चोर महात्मा को साथ लेकर किसी घर में चोरी करने गए, चोरों ने चोरी कर ली। महात्मा ने शंख बजा दिया, घर के लोग जाग गए। चोर चुराए हुए सामान को छोड़कर भाग गए। घर के लोगों ने महात्मा से पूछा, ''आप तो परोपकारी महात्मा हैं फिर यह सब क्या है?'' महात्मा ने सारी वार्ता बताई। महात्मा ने कहा, ''हमारा काम परोपकार करना है, चोरों की बात भी रख ली और आपका नुकसान भी नहीं होने दिया।''

सन्त–महात्मा इस संसार मंडल में आकर हमारे बीच रहते हैं। हमारी तरह ही खाते–पीते और बातचीत करते हैं लेकिन उनका मकसद यही होता है कि ये जीव किसी न किसी तरह प्रभु–परमात्मा से मिल जाएं।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा संदेश

5 फरवरी 1983

गुफा दर्शन

16 पी. एस. आश्रम, राजस्थान

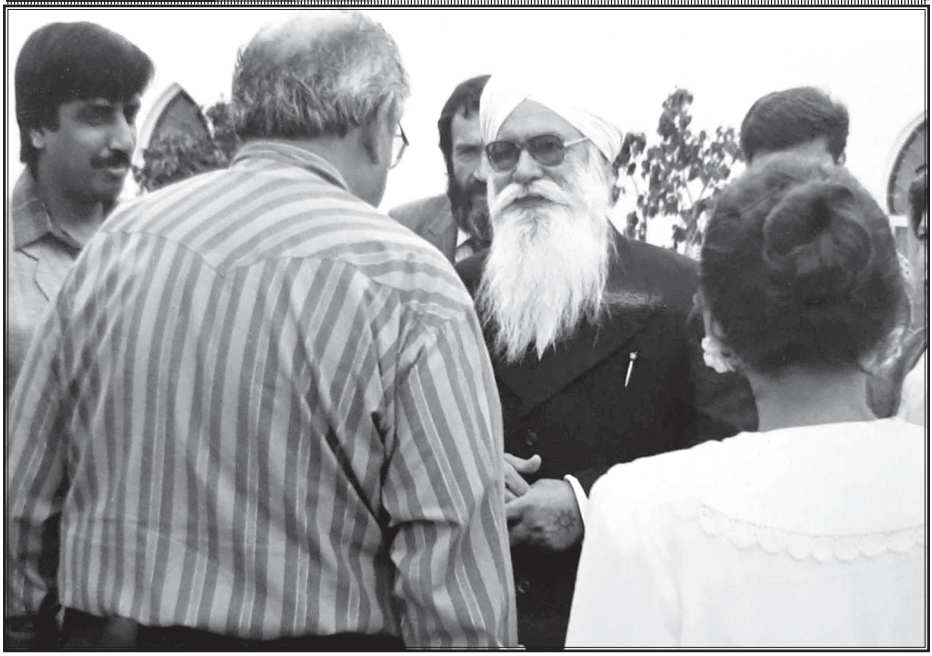

मैं सबसे पहले अपने परमपिता कृपाल का धन्यवाद करता हूँ जिसने मेरी तड़पती आत्मा पर रहम किया। मैं अंधा था मैं उन्हें ढूंढ नहीं सकता था अपना सुधार नहीं कर सकता था, यह सब आपकी दया थी। आपने दिल्ली से इतनी दूर रेगिस्तान में आकर इस गरीब आत्मा पर नाम की बारिश करके इस तपते हुए दिल को ठंडा किया। हमारे और परमात्मा के बीच जो रुकावट है वह हमारा मन है, मन दीवार की तरह आगे खड़ा हो जाता है। कबीर साहब कहते हैंः

मैं जाणया मन मर गया मरके होया भूत।
मोया पिच्छो लग तुरया ऐसा मेरा पूत।।

तुलसी साहब कहते हैंः

तुलसी रण में जूझना घड़ी एक का काम।
नित उठ मन से जूझना बिन खंडे संग्राम।।

प्यारेयो! आत्मा जब से परमात्मा से बिछुड़ी है इसने बहुत दुःखों व बुरे कर्मों के भार अपने सिर पर लाद लिए हैं। परमात्मा जिस शरीर में प्रकट है जब तक वह हम पर दया न करे हम अपने आप कुछ भी नहीं कर सकते। सन्तों का सभी आत्माओं से प्यार होता है उनका किसी खास समाज के साथ ताल्लुक नहीं होता वे सब समाजों को अपना समझते हैं।

सन्तों को पता है कि पापों की मैल के नीचे पवित्र आत्मा भी है। जिस तरह धोबी को यकीन होता है कि मैं कपड़े में से सफेदी निकाल लूँगा उसी तरह सन्तों को पता होता है कि हम जिसके अंदर नाम रखेंगे वह नाम इसके पापों की मैल को धो देगा।

परमपिता कृपाल ने बहुत अभ्यास किया। आपने अपने अभ्यास का केन्द्र रावी दरिया को बनाया। आप रावी दरिया में खड़े होकर अभ्यास करते थे। नींद और भजन का बहुत मुकाबला होता है। नींद कहती है मैं तुझे अंधेरे में रखूंगी लेकिन 'शब्द–नाम' कहता है आ! मैं तुझे प्रकाश की तरफ ले जाऊँ मैं तेरे अंदर प्रकाश प्रकट कर दूँ। अब हमने रास्ता चुनना है कि हमने नींद के पीछे चलना है या शब्द–नाम सतगुरु के पीछे चलना है?

मैं आपको कोई सुनी–सुनाई बात या किसी धर्मग्रंथ से अध्ययन करके नहीं बता रहा। मेरा खुद का जीवन प्रैक्टिकल है, मुझे जो तजुर्बे हुए मैं आपको वही बता रहा हूँ। मैंने आपको बताया था कि हम किस तरह पूरे शरीर से चेतन शक्ति निकालकर पहली मंजिल सहँसदल कवल पर पहुँच सकते हैं लेकिन इससे ऊपर भी चार मंजिलें और होती हैं जो अभ्यासी को तय करनी पड़ती हैं।

सतगुरु ने नाम को प्रकट किया होता है। जो लोग सतगुरु को पकड़ लेते हैं और सतगुरु पर भरोसा कर लेते हैं सतगुरु उन्हें भी नाम के पास पहुँचा देते हैं। जो लोग कहते हैं कि बातों से पर्दा खुल जाएगा या हम बातों से ही महात्मा बन जाएंगे उनका मन उन्हें धोखा दे रहा है। हम अभ्यास करके ही परमपद प्राप्त कर सकते हैं। हम अभ्यास करते हैं तो गुरु हमें अपनी दया–मेहर से मालोमाल कर देता है।

कई प्रेमियों ने मुझसे पूछा कि आप कैसे कामयाब हुए? मेरे पास एक ही जवाब होता है कि मैंने अपने गुरु का कहना माना है। मेरे गुरुदेव ने मुझसे जो कहा मैंने वही किया। आपके हुक्म से ही यह कमरा (गुफा) बनाया गया और यहाँ बैठकर अभ्यास किया। आपका हुक्म था, ''जब जरुरत होगी तब मैं खुद तेरे पास आऊंगा तुम मेरे पास नहीं आओगे।''

अगर हम किसी सोए हुए आदमी को आवाज दें तो वह भी बोलता है। गुरु की चेतन शक्ति हमेशा जागती रहती है वह कभी नहीं सोता। जब आप सच्चे दिल से गुरु परमात्मा को याद करते हैं तो वह हमारी आवाज सुनकर जरूर हमारे पास पहुँचता है।

मैं सारी जिंदगी स्वादों के पीछे नहीं भागा। मुझे महात्मा ने जैसा बताया मैंने उसके मुताबिक ही किया। पहले–पहले नींद छोड़नी बहुत मुश्किल होती है बाद में नींद को प्राप्त करना मुश्किल हो जाता है। मैंने अपनी जिंदगी का काफी हिस्सा जमीन में बैठकर गुजारा है। यहाँ मैंने कोई खास नरम गद्दे नहीं रखे हैं। आप यह जगह देखेंगे यहाँ सोने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

मैं हमेशा कहा करता हूँ कि आप किसी महात्मा के पास जाने से पहले उसके बारे में पढ़कर देखें! क्या उसने अपनी जिंदगी में दस, पंद्रह साल अभ्यास किया है कोई मेहनत की है? आपको कोई ऐसा सन्त नहीं मिलेगा जिसने कभी अभ्यास न किया हो। आप गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब,

बाबा जयमल सिंह जी, सावन सिंह जी महाराज, स्वामी जी महाराज और कृपाल सिंह जी महाराज की जिंदगी पढ़कर देखें! इन सब महात्माओं ने भूख–प्यास काटी, भजन–अभ्यास किया। भक्ति मार्ग कायरों–बुजदिलों का मार्ग नहीं, यह मार्ग सूरमों–बहादुरों का है। पाँच हठीले डाकुओं से मुकाबला करने के लिए गुरु की ढाल को आगे रखना पड़ता है। भजन–सिमरन गुरु की ढाल का काम करता है।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''पढ़े–लिखे लोग थ्योरी बहुत अच्छे ढंग से समझा सकते हैं। किताबें मन–बुद्धि की खोज होती है लेकिन नाम तवज्जो है। नाम आत्मा को धुरधाम सच्चखंड पहुँचाने की जिम्मेवारी होती है। अगर हम नाम को प्रकट किए बिना दुनिया को अपने पीछे लगाते हैं तो काल हमें बहुत भारी सजा देता है।''

आपने सुदंरदास की कहानी पढ़ी है। सुदंरदास महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा था, वह काफी समय मेरे पास रहा। सुंदरदास ने महाराज कृपाल से विनती की, ''क्या वाक्य ही झूठे गुरुओं को सजा मिलती है?'' महाराज जी ने उससे कहा, ''सुंदरदास आँखें बंद कर।'' उसने आँखें बंद की महाराज जी तवज्जो देकर उसकी सुरत को ऊपर ले गए। वहाँ सुंदरदास देखता है कि पाँच सौ झूठे गुरु जमीन में गढ़े हुए हैं, उनकी जीभ के साथ पत्थर बँधे हुए हैं और लम्बी–लम्बी गर्दनों वाले जानवर उन्हें खा रहे हैं। सुदंरदास ने पूछा, ''ये कौन हैं जिनकी गर्दन जमीन तक गढ़ी हुई है?'' धर्मराज ने कहा ये वे लोग हैं जिन्होंने झूठा प्रोपगंडा करके दुनिया को अपने पीछे लगाया था अब ये उसकी सजा भुगत रहे हैं। लम्बी चोंच वाले जानवर जो इन्हें खा रहे हैं, ये इनके पीछे लगने वाले इनके शिष्य हैं।

यह वही जगह है जहाँ परमपिता कृपाल ने और भी कई चोज दिखाए थे। आपकी महिमा बयान नहीं की जा सकती। यह वही जगह है जहाँ महाराज कृपाल ने सुदंरदास को भीखा जी और शर्मद जी के दर्शन भी करवाए थे।

सन्त–महात्मा दया के पुंज होते हैं अगर हमारा बर्तन ठीक है वे तो हमेशा ही दया करते हैं। सवाल तो हमारी ग्रहण शक्ति का है हम जितना ग्रहण करते हैं हम उतना ही उस महापुरुष को समझ सकते हैं। मैंने पहले भी बताया है कि यह वही जगह है जहाँ से परमात्मा कृपाल ने मुझे मेरी सुरत लगने के तीसरे दिन बाद निकाला था। उस समय यहाँ एक सेवादार रहता था। जिसने मेरे शरीर में वापिस आने की आशा छोड़ दी थी।

परमपिता कृपाल दोपहर के समय आए और उन्होंने मुझे इस गुफा से निकाला। अब तो यह जगह प्लेन है, पहले यहाँ गड्ढे थे यह जगह टेढ़ी–मेढ़ी थी। सेवादार ने महाराज कृपाल से कहा, ''आप बीमार हैं अंदर कैसे जाएंगें?'' महाराज जी ने कहा, ''जहाँ अजायब जा सकता है मैं भी वहाँ जा सकता हूँ।''

हुजूर सेवादार के साथ मुझे उठाकर बाहर लाए, तवज्जो देकर सुरत को नीचे उतारकर कहा, ''कोई तकलीफ किसी चीज की इच्छा है तो बता।''

कहने का भाव यह है अगर हम भजन–अभ्यास करते हैं तो गुरु हमारी संभाल करता है। हम जिसकी याद में बैठे हैं वह बेखबर नहीं उसे हमारा फिक्र है। ऐसी जगह देखने से हमें प्रेरणा मिलती है कि जब हम बाहरी दुनिया से संपर्क तोड़कर परमात्मा की याद में बैठते हैं तो परमात्मा हमारे लिए अपना दरवाजा खोल देता है, हम यह काम इंसानी जामें में ही कर सकते हैं।

मैं आशा करता हूँ कि आप यहाँ से यही प्रेरणा लेकर जाएं अपनी जिंदगी को पवित्र बनाएं, गुरु पर भरोसा करें। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आपसे कुछ और नहीं हो सकता तो आप सन्तों से सच्चा प्यार कर लें, आप वहीं जाएंगे जहाँ सन्त आखिरी वक्त जाते हैं। सन्त परमात्मा में समाए होते है वे आपको भी लेकर परमात्मा में समा जाएगें।''

***

कबीर साहब की बानी

06 मई 1985

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

नाम का मोती

पौटर वैली (अमेरिका)

DVD - 520(1)

कृपाल गुरु जी साथों दुःख न सहारे जांदे।
दुनिया दे विच रहके मन नहीं जे मारे जांदे।।

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे प्रेम की मूरत होते हैं। वे संसार में प्यार लेकर आते हैं और किसी की निन्दा या आलोचना नहीं करते। सन्त–महात्मा हमें आत्मा की महानता और परमात्मा के रिश्ते के बारे में बताते हैं और हमें हमारे जानी–दुश्मन मन के बारे में जानकारी देते हैं।

सन्त–महात्मा हमें साफ नक्शा बनाकर दिखाते हैं ताकि सेवक अंदर जाकर गुमराह न हो जाए। वे सेवकों को पूरी जानकारी देते हैं कि किस तरह काल ने नीचे के मंडल बनाए हुए हैं। काल ने अंदर काफी खूबसूरत रचना रची हुई है। अगर आप इनके नजारों में लग गए और नीचे के मंडलों की ऐश–इशरतें मानने लग गए तो ये मंडल प्रलय–महाप्रलय में गिर जाएंगे फिर आपको इंसानी जामें में आना पड़ेगा। हो सकता है कि आप इंसानी जामें से नीचे भी चले जाएं।

सन्त अपने सेवकों को सच्चखंड का निशान देते हैं। जब हम अपने फैले हुए ख्याल को आँखों के पीछे लेकर जाते हैं तो वहाँ सन्त–सतगुरु हमें पहले ही मिल जाते हैं। सतगुरु हर मंजिल पर हमारे साथ होते हैं और हमारी अगुवाई करते हैं। सतगुरु कहते हैं, ''बेटा! आपने इस तरफ जाना है, उस तरफ नहीं जाना।''

मन को मारूँ पटक के, टूक टूक हो जाय।
विष की क्यारी बोय कर, लुनता क्यों पछिताय।।

आज आपके आगे कबीर साहब की बानी रखी जा रही है। सन्त–महात्मा हमें बताते हैं कि हमारे और परमात्मा के दरम्यान अगर कोई रूकावट है तो वह हमारा मन ही है। हमने अपने मन के साथ ही संघर्ष करना है। गुरु रामदास जी कहते हैं, ''हमारा मन के साथ ही झगड़ा है अगर हम मन को जीत लेते हैं तो हम परमात्मा में ही मिल जाते हैं।''

रामचन्द्र के गुरु विशिष्ट जी थे। विशिष्ट जी ने कहा अगर कोई यह कहे कि ऐसा बहादुर आदमी पैदा हो गया है जिसने कई मील लम्बा–ऊँचा हिमालय अपने सिर पर उठा लिया है बेशक यह बात मानने वाली नहीं फिर भी मान लेते हैं कि शायद! परमात्मा ने इतना शक्तिशाली आदमी पैदा कर दिया हो। अगर कोई यह कहे कि किसी आदमी ने सारा समुंद्र पी लिया है बेशक यह बात मानने वाली नहीं फिर भी मान लेते हैं शायद! परमात्मा ने कोई इतना शक्तिशाली आदमी पैदा कर दिया हो अगर कोई यह कहे कि मैंने मन को बस में कर लिया है, हम यह बात मानने के लिए तैयार नहीं। इसका मतलब यह नहीं कि आज तक किसी ने भी अपने मन को बस में नहीं किया।

सन्त–महात्माओं ने 'शब्द–नाम' की कमाई करके मन की पूरी जानकारी प्राप्त की। उन्होंने मन और आत्मा के रिश्ते को समझा कि किस तरह यह मन आत्मा के ऊपर हावी हुआ बैठा है फिर वे अपने सेवकों को पूरी जानकारी देते हैं।

महात्मा हमें बताते हैं कि नाम लेते समय सतसंगी को सोच लेना चाहिए कि मैंने एक ऐसे हठीले दुश्मन के साथ संघर्ष करना है जो थोड़ा करने से बस में आने वाला नहीं। इसका मतलब यह भी नहीं कि मन शब्द–धुन से ताकतवर है। सतगुरु ने हमें नामदान के वक्त शब्द–धुन के साथ लेस कर दिया है अगर हम इस संघर्ष में जीत जाते हैं तो सन्त–सतगुरु हमें परमपद का ईनाम देते हैं।

सन्तों के समझाने का यह मतलब है कि हम जब तक मन को 'शब्द–नाम' की लज्जत नहीं दे देते तब तक यह मन जप–तप, हठ योग, किसी भी अच्छे रीति–रिवाज या कर्मकांड करने से बस में नहीं आता।

कबीर साहब कहते हैं कि यह मन कभी मित्र बनकर समझाता है कभी कोई लालच देता है। कभी अंदर ही वकील की तरह समझाकर विषय–विकारों में फँसा देता है, खोटे कर्मों में फँसा देता है। जब खोटे कर्मों को भोगना पड़ता है तो यह पछताता है। अगर कोई जहर का पौधा बीजकर उसमें से अमृत प्राप्त करना चाहे तो ऐसा कभी नहीं हो सकता। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

जो बीजे सो उगवे, खांदा जांणा जिओ।

हम जो कर्म करते हैं उन कर्मों को हमने ही भोगना है इसलिए हम सोच समझकर कर्म करें। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं:

इदा दोष न दीजे काहूँ, दोष कर्मां आपणयां।
जो मैं कीता सो मैं पाया दोष न दीजे अवर जणां।।

यह मन फटक पिछौर ले, सब आपा मिट जाय।
पिंगल होय पिव पिव करे, ताको काल न खाय।।

हमने मन को बस करने के लिए सोचना है अगर मन को शब्द–नाम का रस दे देते हैं तो मन उस तरफ लग जाता है। मन लज्जत का आशिक है, इसके ऊपर सोहबत का बहुत जल्दी असर होता है। अगर हम शराबी–कबाबी, जुऐबाजो की सोहबत में जाते हैं तो हमें भी वही आदत पड़ जाती है। अगर हम नाम के रसिये, नाम जपने वालों की सोहबत–संगत में जाते हैं तो हमारे अंदर भी नाम जपने का शौंक, विरह, तड़प पैदा हो जाती है।

मन पाँचों के बस पड़ा, मन के बस नहिं पांच।
जित देखूं तित दौं लगी, जित भागूं तित आँच।।

आप कहते हैं कि मन बेचारा बेबस है, यह अपने घर को भूला हुआ है और आत्मा भी अपने घर को भूली हुई है। काल भगवान ने इस किस्म की रचना रची है कि उसने मन की ड्यूटी लगा दी कि कोई भी आत्मा सतगुरु की भक्ति न कर सके, मेरी हद से बाहर न जाए। आखिर काल भगवान ने मन के पीछे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के पाँच डाकु लगा दिए। अब यह मन इन पांच डाकुओं के बस में हो चुका है।

कबीर साहब कहते हैं कि अगर मन काम के बस पड़ा है तो वहाँ काम की आग है। क्रोध के बस पड़ा है तो क्रोध की आग भड़क रही है। यह उनके बस में होकर परेशान हुआ बैठा है। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे है, स्थूल पर्दा भी हमारी आँखों के पीछे सूक्ष्म त्रिकुटी के अंदर है। जब हम ब्रह्म त्रिकुटी में पहुँच जाते हैं तो सूक्ष्म पर्दा उतर जाता है। वहाँ आत्मा से तीनों पर्दे उतर जाते हैं और पारब्रह्म में पहुँच जाते हैं। मन ब्रह्म की अंश है यह अपने घर पहुँच जाता है, आराम से टिक जाता है; हमारी आत्मा इसके पंजे से आजाद हो जाती है। वहाँ पहुँचकर आदमी कह सकता है कि अब मैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का दास नहीं रहा क्योंकि इसके आगे इनका नामोनिशान नहीं। सूफी सन्त शेख फरीद साहब कहते हैं:

फरीदां ऐ गंदला विष भरियां रखियां खंड लबेड़।
ईक रहंदी रह गई ईक रहंदी गई उजाड़।।

काल ने औरत–मर्द के खूबसूरत जोड़े बना दिए हैं। मर्दों को औरतें खूबसूरत लगती हैं और औरतों को मर्द खूबसूरत लगते हैं। तजुर्बा बताता है कि हम जिन भोगों में फँसे बैठे हैं शुरु–शुरु में हमें ये जितना उत्साह देते हैं वक्त पाकर ये साधारण बन जाते हैं। पहले हमारा मन इन भोगों में जितनी लज्जत समझता था बाद में हट जाता है। बूढ़े हो जाते हैं हमारी इन्द्रियाँ भोगों की तरफ से जवाब दे जाती हैं। आपको पता है कि बूढ़ें

आदमी का ख्याल हर तरफ से हट जाता है। आखिर औरत को मर्द छोड़ जाता है और मर्द को औरत छोड़ जाती है।

फरीद साहब के समझाने का भाव इतना ही है कि काल ने जहर के ऊपर चीनी लगाकर रखी हुई हैं। इसे राजा खाए, रानी खाए, गरीब खाए, अमीर खाए, औरत खाए या मर्द खाए आखिर वह पछताता है। एक बार यह जहर दिमाग में चढ़ जाए तो सारी जिंदगी नहीं उतरती।

कबीर बैरी सबल हैं, एक जीव रिपु पाँच।
अपने अपने स्वाद को, बहुत नचावें नाच।।

कबीर साहब कहते हैं कि जीव एक है और इसके दुश्मन पाँच हैं। ये दुश्मन अपने–अपने स्वाद के लिए जीव को नचा रहे हैं। किसी को इस पर तरस नहीं आता ये इन्हें मित्र समझता है और ये इसे खत्म करते जाते हैं।

कबीर मन तो एक है, भावें तहाँ लगाय।
भावें गुरु की भक्ति कर, भावें विषय कमाय।।

कबीर साहब कहते हैं कि मन एक है और यह एक ही काम कर सकता है। चाहे इसे गुरु की भक्ति में लगाएं या विषय–विकारों में फँसाए। गुरु नानकदेव जी भी कहते हैं, ''आप एक ही रस प्राप्त कर सकते हैं।''

मन के मारे बन गये, बन तज बस्ती माहिं।
कहें कबीर क्या कीजिये, यह मन ठहरे नाहिं।।

सतसंगियों को तो मन की लहरों का पता है कि यह लहरें किस तरह उठती हैं? यह मन कभी त्यागी बना देता है, कभी कहता है कि दुनियादारी कमानी है, कभी कहता है कि सूरमा बनना है। कभी कहता है कि दुनिया को छोड़कर वन में चलकर भक्ति करनी ही ठीक है फिर कहता है घर में चलें दुनिया भी देखनी चाहिए। यह हर एक के साथ मशकरी करता है।

तीन लोक चोरी भई, सबका धन हर लीन्ह।
बिना सीस का चोरवा, पड़ा न काहू चीन्ह।।

आप कहते हैं कि यह मन दसवें द्वार तक आपका पीछा करता है। सूक्ष्म, महासूक्ष्म होकर भी आपका पीछा करता है। पता नहीं इसने कब धोखा दे देना है? इसका कोई सिर–पैर नहीं, यह बिना सिर का चोर है। यह अंदर से ही बंदे को प्रेरित करके उससे करतूत करवा देता है और उसका रूप हम बाहर देख सकते हैं कि इसका क्या नतीजा निकलता है।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो–शब्द' का भेद मिला था। बाबा बिशनदास जी के गाँव का एक आदमी एकमदास हरिद्वार में बड़े अखाड़े का महन्त बन गया। उस समय हिन्दुस्तान में जीपें–कारें नहीं होती थी। महन्त एकमदास ने सैर के लिए बग्गी रखी हुई थी। वह काफी देर घर से बाहर रहा। उसकी मामूली सी जायदाद थी। आखिर मन में ख्याल आया कि जायदाद का ख्याल रखना चाहिए, वह घर वापिस आ गया।

शुरु–शुरु में तो एकमदास ने अपनी भाभियों को बीबीयाँ कहा। एक दिन उसने गाँव में लोगों से कहा कि मैं शादी करवाना चाहता हूँ। उस समय एकमदास की उम्र सत्तर साल थी, उससे शादी करने के लिए कौन तैयार होता? आखिर उसने एक बूढ़ी औरत घर में रख ली। बाबा बिशनदास जी ने उससे कहा, ''एकमदासा! तू यह क्या कर रहा है?'' लेकिन एकमदास मानने के लिए तैयार नहीं था। घर में जो धन–पदार्थ था उसे खाकर वह औरत भाग गई। वह एक और बूढ़ी औरत ले आया। वह अच्छा खाती–पीती थी, खाने–पीने के लिए ही घर में घुसी थी। उसने बूढ़े से क्या लेना था? आखिर जमीन बिक गई कोई पैसा नहीं रहा।

मैं बाबा बिशनदास जी से मिलने जा रहा था, एकमदास ने कंधो पर टोकरी में सब्जियाँ रखी हुई थी, वह छड़ी के सहारे चल रहा था। मैंने एकमदास बाबा को नहीं पहचाना लेकिन उसने मुझे पहचान लिया और

कहा, ''तू अजायब सिंह है?'' मैंने कहा, ''हाँ।'' उसने कहा कि तू बाबा बिशनदास जी के पास से जल्दी न आना मैं वापिस आकर तुझे कोई शिक्षा दूँगा। मैंने गाँव में तो यह बात कह दी है कि कोई आदमी शादी न करवाए।

मैं बाबा बिशनदास जी के पास बैठा रहा, एकमदास सब्जी देकर वापिस आया और कहने लगा कि मैं सबको होका देकर कहता हूँ, ''कोई शादी न करवाए कहीं तू भी शादी न करवा लेना।'' मैंने उससे कहा, ''तू अभी भी गलती कर रहा है, तेरा मन तुझे धोखा दे रहा है, शादी करवाना कोई बुरी बात नहीं। तू यह कह कि जैसी गलती मैंने की है वैसी गलती कोई और न करे। पहले तू साधु बना, तेरी उम्र सत्तर साल की हो गई है तेरी टाँगे कब्र में हैं अब तू औरतों को अपने घर में रखता है।'' मन हमें हमारी गलती नहीं बताता और दूसरी सलाह दे देता है।

कबीर यह मन मस्खरा, कहूँ तो माने रोस।
जा मारग साहब मिले, ताहि न चाले कोस।।

कबीर साहब कहते हैं कि सन्त प्यार से प्रेमियों को समझाते हैं कि आपके मन में यह नुख्स है, यह इस तरह आपको धोखा देता है। प्रेमी तो सुनकर खुश होते हैं लेकिन आमतौर पर हम बुरा मनाते हैं कि सन्त हमें हमारी गलतियाँ क्यों बताते हैं? जहाँ परमात्मा मिलता है यह उस तरफ एक मील भी चलने के लिए तैयार नहीं।

मन मुरीद संसार है, गुरु मुरीद कोइ साध।
जो माने गुरु बचन को, ता का मता अगाध।।

मुरीद मुर्दे को कहते हैं। दुनिया मन के पीछे मुर्दा हुई बैठी है, मन जो करवाए वही करते हैं। जिस तरह मुर्दे को नहलाने वाले की मर्जी है वह उसके ऊपर गंद छिड़के या इत्तर छिड़के। सीधा करके नहलाए या उल्टा करके नहलाए मुर्दे की कोई मर्जी नहीं होती। मन की यही हालत है।

साधु ही गुरु के वचन को मानता है। हमें साध गति दसवें द्वार में पहुँचकर प्राप्त होती है। हम जब तक अंदर नहीं जाते हमें मन के दाँव–पेचों का पता नहीं लगता और न ही हमें गुरु की ताकत का ज्ञान होता है। जब हम दसवें द्वार में पहुँच जाते हैं फिर हमें पता लगता है कि गुरु की क्या ताकत है और मन की क्या ताकत है?

जे ती लहर समुद्र की, तेती मन की दौड़।
सहजे हीरा नीपजे, जो मन आवे ठौर।।

कबीर साहब कहते हैं कि आप मन की लहरों का अंदाजा नहीं लगा सकते। जिस तरह समुंद्र के अंदर अनगिनत लहरें उठती रहती हैं उसी तरह मन सारा दिन आपके अंदर लहरें उठाए रखता है। एक लहर सिरे पर पहुँचती नहीं कि दूसरी पीछे तैयार होती है। अगर आपका मन ठहर जाए ठिकाने पर पहुँच जाए तो आपके अंदर **नाम का मोती** चमक उठे।

दौड़त दौड़त दौड़िया, जहँ लग मन की दौड़।
दौड़ थकी मन थिर भया, वस्तु ठौर की ठौर।।

जिस तरह समुद्री जहाज के ऊपर कौएं, कबूतर और पक्षी भी रहते हैं। वे चाहे जितनी मर्जी लम्बी उड़ान भर लें जहाज उनके पीछे नहीं जाता। आखिर वे पक्षी जहाज पर आकर ही बैठते हैं क्योंकि पानी के अंदर कोई ठिकाना ही नहीं, यही हमारे मन की हालत है।

सन्त कहते हैं कि आप मन के पीछे न जाएं मन जितना दौड़ता है इसे दौड़ लेने दें। आप खुद सिमरन में टिके रहें क्योंकि आप जिस शब्द गुरु, नाम गुरु को प्राप्त करना चाहते हैं वह आपके अंदर ही है, उसने वहीं प्रकट हो जाना है।

पहिले यह मन काग था, करता जीवन घात।
अब तो मन हंसा भया, मोती चुन चुन खात।।

जब हमारी हालत बाहरमुखी होती है हम स्थूल शरीर में विचरते हैं उस समय हमारे मन की हालत कौए जैसी है। जैसे कौआ अपनी खुराक के लिए जीवों का कत्ल करता है लेकिन जब यह मन अपने ठिकाने ब्रह्म में पहुँच जाता है तब मन की हालत हंस जैसी हो जाती है। जैसे हंस मोती खाकर खुश होता है फिर यह नाम का अमृत पीकर ही खुश होता है।

कबीर मन परवत हता, अब मैं पाया जान।
टाँकी लागी प्रेम की, निकली कंचन खान।।

कबीर साहब कहते हैं कि पहले मैं मन को पहाड़ जैसा ऊँचा समझता था कि शायद! इस पर चढ़ना बहुत मुश्किल है। जब मैं गुरु का बल लेकर अंदर गया फिर सोने की खान नाम प्रकट हो गया।

अगम पंथ मन थिर करे, बुद्धि करे परवेश।
तन मन सब ही छाँड़कर, तब पहुँचे वा देश।।

आत्मा जहाँ से इस संसार में आई थी, जब हम मन को थिर कर लेते हैं फिर हमें वह देश मिल जाता है।

मन ही को परबोधिये, मन ही को उपदेश।
जो यह मन बस आवई, शिष्य होय सब देश।।

मन को स्थिर करने का उपाय करना है। मन को स्थिर करने के लिए शब्द–नाम की कमाई करनी है, मेहनत करनी है। अगर हम मन को स्थिर कर लेते हैं उसे उसके टिकाने पर पहुँचा देते हैं तो अपने आपका सुधार हो जाता है और दुनिया भी शिष्य बन जाती है। उसके पैरों को छूना चाहती हैं उसके अंदर वह ताकत पैदा हो जाती है जिसे मन छिपाकर बैठा है।

शिष शाखा बहुतै किया, सतगुरु किया न मित्त।
चाले थे सतलोक को, बीचहि अटका चित्त।।

अब कबीर साहब कहते हैं कि मन और क्या धोखा देता है? यह हर एक के दिल में इच्छा पैदा कर देता है कि मैं किसी का शिष्य न बनूँ, गुरु ही बनूँ। मेरे सबसे ज्यादा शिष्य हों। उसने खुद तो अपने अंदर गुरु को प्रकट नहीं किया होता लेकिन लोगों का गुरु बनने के लिए तैयार रहता है।

आपने मिस्टर ओबराय की किताब पढ़ी होगी। महाराज सावन सिंह जी का नामलेवा सुंदरदास मेरे पास काफी समय रहा है। उसके कुछ तजुर्बे महाराज कृपाल के साथ हुए थे। महाराज कृपाल सिंह जी उसे इस तरह बिठा देते थे जिस तरह हम बैठे हैं। सुंदरदास अंदर के हाल बताता था कि जो लोग बिना कमाई के गुरु का काम करते हैं, काल उन्हें किस तरह बेलने में डालकर दु:ख देता है? जो लोग गलत आदमी को मानते हैं काल उनकी क्या हालत करता है?

मैं बताया करता हूँ कि यह आत्मा का सवाल है कि सन्त की शरण में जाने से पहले आप उसकी जिंदगी जरूर पढ़े क्या उसने अपनी जिंदगी में कोई अभ्यास किया है, क्या दस–बीस साल परमात्मा की भक्ति की है? क्योंकि पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है, पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है। जिसने भजन–अभ्यास किया है वही भजन–अभ्यास करवा सकता है।

बात बनाई जग ठग्यो, मन परबोध्यो नाहिं।
कबीर यह मन ले गया, लख चौरासी माहिं।।

कबीर साहब ऐसे आदमियों की मिसाल देते हैं जिन्होंने कमाई तो नहीं की होती वे पार्टियों के जोर पर गुरु बन जाते हैं। वहाँ बहुत से लोग देखा–देखी इकट्ठे हो जाते हैं। उन्होंने लोगों से बहुत सा धन इकट्ठा किया होता है। वहाँ अच्छे आश्रम होते हैं, उनसे पैसा संभाला नहीं जाता हम अजीब किस्म के लोग हैं वहीं जाकर धन देते हैं। उन्होंने जग को ठगने का साधन बनाया हुआ है। जो परमात्मा के नाम पर गलती करते हैं परमात्मा उन्हें माफ नहीं करता, वे सारे ही चौरासी लाख योनियों में जाएंगे।

चतुराई क्या कीजिये, जो नहिं शब्द समाय।
कोटिक गुन सूवा पढ़े, अंत बिलाई खाय।।

यह बातों का या चतुराई का मजबूत नहीं। हम जब तक 'शब्द–नाम' में नहीं समा जाते, शब्द रूप नहीं हो जाते तब तक हमारी यह हालत है जिस तरह तोते में हजार गुण हों चाहे उसे कितना भी पढ़ा–सिखा लें आखिर वह बिल्ली का ही खाज रहता है।

अलमस्त फिरे क्या होत है, सुरत लीजिये धोय।
चतुराई नहिं छूटसी, सुरत शब्द में पोय।।
पढ़ना गुनना चातुरी, यह तो बात सहल।
काम दहन मन बस करन, गगन चढ़न मुश्किल।।

सन्त–महात्मा पढ़–पढ़ाई की निन्दा नहीं करते, वह सच्चाई जरूर बताते हैं कि पढ़ना–लिखना बहुत आसान है लेकिन मन को बस में करना मुश्किल है और अंदर सच्चखंड में जाना इससे भी मुश्किल है। काम को बस में करना इससे भी मुश्किल है।

पढ़ि पढ़ि के पत्थर भये, लिख लिख भये जो ईंट।
कबीर अंतर प्रेम की, लागी नेक न छींट।।

कबीर साहब कहते हैं कि पढ़ कर नरम और समझदार होना था, औरों को भी समझाना था लेकिन वे पत्थर की तरह कठोर हो गए। पोथियों में जो लिखा था उसे पढ़कर अंदर जाना था लेकिन ऐसा नहीं किया लोगों की निन्दा करने लगे, बहस करने लगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

पढ़या मूर्ख आखिए जिस लभ लोभ अहंकारा।

गुरु नानकदेव जी महाराज तो यहाँ तक कहते हैं:

पढ़या होवे गुनाहगार ते उम्मी साध न मारिए।

अगर पढ़ा हुआ गलती करता है तो उसकी जगह अनपढ़ साधु को सजा नहीं दी जा सकती, परमात्मा उसे अपने घर में जगह देता है।

नाम भजो मन बस करो, यही बात है तंत।
काहे को पढ़ि पच मरो, कोटिन ज्ञान गिरंथ।।

कबीर साहब कहते हैं कि सब ग्रंथों–पोथियों का यही निचोड़ है कि आप अपने मन को बस में करें। काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार से बचें, अंदर जाकर 'शब्द' से जुड़ें।

कबीर आधी साखि यह, काटि ग्रन्थ कर जान।
नाम सत्त जग झूठ है, सुरत शब्द पहिचान।।

कबीर साहब कहते हैं अगर समझ आ जाए तो ग्रंथ की आधी कड़ी ही काफी है। हमारे तजुर्बे में आया है कि नाम सत है सदा कायम है उसने कायम रहना है। संसार काल की रचना है यह बदलनहार है। नाम नहीं बदलता बल्कि नाम इसे तब्दील कर देता है।

***

सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच्चा शिष्य

गुर सतिगुर का जो सिखु अखाए।
सु भलके उठि हरिनामु धिआवै।।

गुरु रामदास जी कहते हैं कि गुरु का **सच्चा शिष्य** सुबह उठकर नाम की कमाई करता है, नाम के साथ जुड़ जाता है। वह सबसे पहले अपने सतगुरु का काम करता है।

हुजूर महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सौ काम छोड़कर सतसंग में जाएं और हजार काम छोड़कर भजन में बैठें। जैसे तन को खुराक देना जरूरी है उसी तरह आत्मा को खुराक देना भी जरूरी है क्योंकि हमारी आत्मा भी जन्म–जन्मांतर से भूखी है इसकी खुराक भजन–अभ्यास है।''

उदमु करे भलके परभाती।
इसनानु करे अमृतसरि नावै।।

हमारी आत्मा के ऊपर पहले स्थूल शरीर है उसके आगे सूक्ष्म और कारण है। **सच्चा शिष्य** यह तीनों पर्दे उतारकर अमृतसर में पहुँचे। यह अमृतसर हमारे शरीर में है, इसमें स्नान करे। बाहर ऐसा कोई अमृतसर नहीं जो हमारे पापों की मैल को उतार सके, वह अमृतसर हमारे शरीर में, हमारे वजूद में है।

जो अमृतसर पंजाब में है उसकी नींव गुरु रामदास जी ने रखी थी और गुरु अर्जुनदेव जी ने इसे पूरा किया था, यह दसवें द्वार की नकल है। जब मिस्त्री से कहा कि दसवें द्वार का कमल बनाना है लेकिन मिस्त्री ने कभी कमल नहीं देखा था, वह कमल कैसे बना सकता था।

गुरु साहब ने मिस्त्री को भजन पर बिठाया, अपनी तवज्जो दी और उसे ऊपर ले गए। मिस्त्री ने कहा, ''आप मुझे यहीं रहने दें।'' आपने कहा, ''पहले इसकी नकल बाहर बनाओ फिर तुम्हें यहाँ ले आएंगे।'' गुरु अमरदास जी के समय में तो अमृतसर का कोई नामोंनिशान नहीं था। गुरु अमरदास जी अपनी बानी में लिखते हैं:

सच्चा अमृतसर काया माहि, मन पीवे भाय सो भाए हे।

शिष्य का धर्म है कि वह सुबह उठकर उद्यम करे, आलस को दूर करे और इस अमृतसर में स्नान करे।

उपदेसि गुरु हरि हरि जपु जापै।
सभि किलविख पाप दोख लहि जावै।।

अब गुरु रामदास जी कहते हैं, ''गुरु का दिया हुआ नाम रोजाना जपें। इस अमृतसर में पहुँचकर स्नान करें तो जितने भी पाप और बुरे कर्म हैं वे यहाँ स्नान करने से खत्म हो जाते हैं। इस अमृतसर में स्नान करके शिष्य साधगति को प्राप्त हो जाता है।''

फिरि चड़ै दिवसु गुरबाणी गावै।
बहदिआ उठदिआ हरिनामु धिआवै।।

आप कहते हैं, ''जब दिन चढ़ जाता है फिर अपना वक्त बर्बाद न करें मौका बने तो सतसंग में जाएं। सतसंग में बैठे हुए भी सिमरन करें। सतसंग में जाते हुए और सतसंग से वापिस आते हुए भी सिमरन करें। साँस–साँस के साथ सिमरन जारी रखें।''

जो सासि गिरासि धिआए मेरा हरि हरि।
सो गुरसिखु गुरु मनि भावै।।

आप कहते हैं, ''जो शिष्य स्वाँस–स्वाँस के साथ सिमरन करता है वह गुरु को भाता है।'' मैं कई दफा कहा करता हूँ कि जब हम भजन–अभ्यास में बैठते हैं उस समय हम परमात्मा–गुरु के दरवाजे पर बैठे होते हैं। अगर दरवाजा नहीं खुलता तो इसका मतलब यह नहीं कि हम अभी तैयार नहीं हैं लेकिन हमें यह शर्त नहीं रखनी चाहिए कि पहले दरवाजा खुले हम बाद में बैठेंगे। हमें आशिकों वाला मन बना लेना चाहिए।

अलख जगोंणा कम फक्करां दा, दात करे मन भाणी।

हमारा काम भजन–सिमरन करना है, दरवाजा खोलना उसका काम है, दरवाजा खोले न खोले उसकी मर्जी है।

जिसनो दइआलु होवै मेरा सुआमी।
तिसु गुरसिख गुरु उपदेसु सुणावै।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं, ''जिन पर मेरा परमात्मा खुश होता है, दयावान होता है केवल उन्हीं के दिल में उपदेश लेने की चाह पैदा होती है। वे गुरु के पास जाते हैं और उन्हे वह उपदेश अच्छा लगता है।''

जन नानकु धूड़ि मंगै तिसु गुरसिख की।
जो आपि जपै अवरह नामु जपावै।।

गुरु रामदास जी कहते हैं, ''मैं ऐसे शिष्य की धूड़ि माँगता हूँ। शिष्य कोई छोटी सी पदवी नहीं, साध कोई छोटी सी पदवी नहीं। जो खुद नाम जपता है औरों से भी नाम जपवाता है। जो खुद अपने गुरु की सिफत करता है और दूसरों को भी अपने गुरु की सिफत करने में लगा देता है।''

जिन्हें गुरु का बिछोड़ा हुआ है वही जानते हैं कि दर्द क्या होता है? प्रेम करने वाला ही बता सकता है कि प्रेम कैसे किया जाता है। प्रेम का संदेश केवल प्रेमियों के लिए ही होता है।

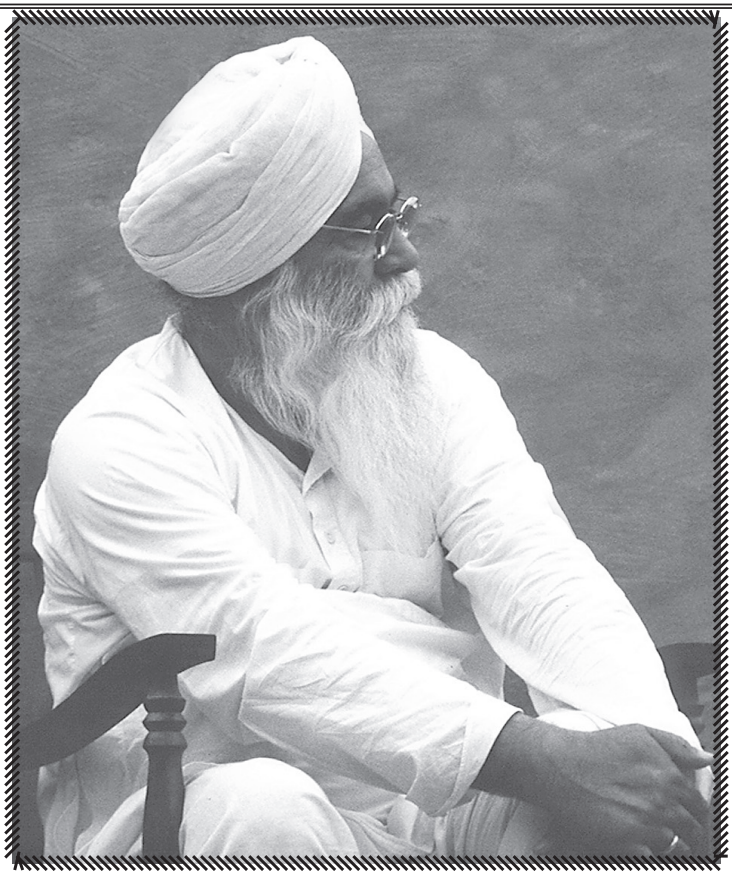

मुझे आशिकी का दर्द है और मैं आशिकों को यह बताता हूँ कि आशिकों के बिना प्रेम की कहानी पूरी नहीं होती। अगर आप यह सच मानते हैं तो प्रेम में पड़कर देखें। प्रेमी स्याने लोगों से बहस नहीं करते बल्कि वे चुप रहते हैं। हर कोई अपना दर्द बताता है लेकिन अजायब सिंह किसे अपना दर्द बताए? उसे तो प्रेम का दर्द है।

सच्चाई तो यह है कि उसे अपने गुरु के बिछोड़े का दर्द होता है, उसे अपने गुरु से प्यार होता है। वह अपने गुरु के प्यार को किसी भी बहाने से गाता है। जो भी स्वाँस गुरु की याद के बिना जाता है उस स्वाँस को वह काफिर समझता है। ***

सवाल-जवाब

77 आर. बी. आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी – *अगर अमेरिका से यहाँ आते हुए हमारा विमान दुर्घटनाग्रस्त हो जाए और उसमें सफर करने वाले सभी लोग मर जाएं तो आत्माएं किस हालत में होंगी?*

बाबा जी – इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आत्मा किस हालत में शरीर छोड़ती है। जिस आत्मा के साथ गुरु पावर है उसे मुक्ति मिलेगी। आपको ऐसा कभी नहीं सोचना चाहिए कि जो आत्माएं दुर्घटना में शरीर छोड़ती हैं गुरु उनकी संभाल नहीं करता।

आपको किसी दुर्घटना के बारे में नहीं सोचना चाहिए, हमेशा गुरु के आगे प्रार्थना करनी चाहिए कि जो लोग यह पवित्र यात्रा कर रहे हैं वे गुरु की दया से सही सलामत अपने घर पहुँचें। अगर दुर्घटना होती है तो सोचें कि जो लोग आपके लिए दिन-रात प्रार्थना कर रहे हैं उनका क्या होगा?

प्यारेयो! अगर आप दु:खी हैं या आपको कोई दिक्कत है तो मुझे भी दु:ख होगा। गुरु गोबिंद सिंह जी कहते हैं:

दास दु:खी ते मैं दु:खी।

अगर मेरे प्यारे खुश नहीं तो मैं भी खुश नहीं। आपको कभी भी इस तरह की बात नहीं सोचनी चाहिए बल्कि अपने गुरु से प्रार्थना करनी चाहिए कि आप कभी ऐसी दुर्घटना में न फँसें।

हर किसी की मौत का समय और कारण पहले से ही तय होता है और इंसान उन्हीं हालातों में शरीर छोड़ता है। ऐसा जरूरी नहीं कि हम लोग विमान दुर्घटना में ही शरीर छोड़ें। कई लोग अपने घरों, गाँवों में

खुशी से शरीर छोड़ते हैं बहुत से लोग कार या ट्रेन ऐक्सिडेंट में भी मरते हैं क्योंकि मृत्यु का समय और कारण पहले से ही निश्चित है।

दूसरे विश्व युद्ध के समय हिटलर आगे बढ़ रहा था। उस समय भारत के लोगों को ब्रिटिश आर्मी में शामिल होने के लिए भेजा जा रहा था लेकिन कोई आर्मी में नहीं जाना चाहता था क्योंकि सब जानते थे कि वे लड़ाई में मारे जाएंगे। मैंने अपनी इच्छा से उस लड़ाई में जाने के लिए अपना नाम लिखवाया। मैं लड़ाई में नहीं मरा क्योंकि मेरी मृत्यु लड़ाई में नहीं लिखी थी।

सन् 1947 में जब भारत और पाकिस्तान का बँटवारा हुआ उस समय कश्मीर की लड़ाई हुई, मुझे उस लड़ाई में भी लड़ना पड़ा। मैं उस लड़ाई में बम्ब आदि चीजों से भी काम लेता था। मैं इस युद्ध में भी नहीं मरा क्योंकि मेरी मृत्यु लड़ाईयों में नहीं लिखी थी इसलिए मैं शान्तिपूर्वक यहाँ बैठा हूँ। ऐसा जरूरी नहीं कि हम लड़ाई में मरें जिनका शान्तिपूर्वक मरना निश्चित है वे अपने घर में मरते हैं।

जब हम कोई धार्मिक यात्रा करते हैं अगर उस यात्रा में हमारी मौत हो जाती है तो उस समय दुनियावी लोग ऐसे मौके को अपने हाथ से नहीं जाने देते और कहते हैं, ''उस आदमी को देखें! वह गुरु को मानता था इसलिए पवित्र यात्रा में मर गया।''

आर्मी में जब हमें बंदूक चलाने की ट्रेनिंग मिल रही थी उस समय हम बंदूकों को चलाकर देख रहे थे, जिसमें से एक बंदूक काम नहीं कर रही थी हमने उस बंदूक को एक तरफ रख दिया और दूसरी बंदूकें चलाकर देखने लगे। शाम को सभी बंदूकों और गोलियों की गिनती की गई। आर्मी के लोग बंदूक और बारुद के मामले में सख्त होते हैं लेकिन किसी ने भी उस खराब बंदूक की तरफ ध्यान नहीं दिया जिससे गोली नहीं चलाई गई थी।

हमारे अफसर ने हमें खड़े होने के लिए कहा। हम सिग्नल भेजने वाले तीन जवान थे, जिसमें से एक जवान को वह खराब बंदूक लाकर मेरे पीछे खड़े होने के लिए कहा गया। उस जवान ने बंदूक लाकर जमीन पर रख दी। बिना टाईगर दबाए ही उस बंदूक की गोली चली जो मेरी टाँगों के बीच से निकल गई फिर वह गोली मेरे सामने खड़े जवान की बाजू के नीचे से निकलकर तीसरे जवान को जाकर लगी जो उसी समय मर गया।

आर्मी में बंदूकें, गोला, बारूद गिनने में बहुत सख्ती की जाती है। जब गोलियाँ गिनी जाती हैं तो उन्हें पता चल सकता था कि खराब बंदूक में से गोली नहीं चलाई गई तो उस बंदूक में से गोली निकाल लेनी चाहिए थी लेकिन ऐसा नहीं किया गया। जब गोली बंदूक में से निकली तो पहले मैं मरता क्योंकि मैं बंदूक के बिल्कुल सामने खड़ा था, मेरे बचने के बाद दूसरा आदमी जो मेरे सामने खड़ा था वह मर जाता लेकिन उसकी किस्मत में भी इस तरह मरना नहीं लिखा था। जिस तीसरे आदमी को गोली लग ही नहीं सकती थी गोली उसे लगी और वह मर गया।

काल ने हर किसी की मौत का समय और कारण निश्चित किया हुआ है। जब मौत का समय आता है तब चतुराई, प्लेनिंग कुछ काम नहीं करती। ऐसा कोई रास्ता नहीं कि मौत को टाला जा सके। आप ऐसे हालात से कितना भी भाग लें आपकी किस्मत में जिस तरह मरना लिखा है आप उसी तरह मरेंगे।

पाकिस्तान के बार्डर के पास एक जगह फाजिल्का है। सन् 1971 की लड़ाई के समय वहाँ के एक आदमी ने सोचा कि मैं अपने परिवार को जोधपुर में अपने किसी रिश्तेदार के पास छोड़ आऊँ ये लोग वहाँ सुरक्षित रहेंगे। परमात्मा की मर्जी से ऐसा हुआ कि पाकिस्तान के जहाजों ने जोधपुर शहर पर बम्ब गिराया और उसका परिवार मारा गया। जिसे जिस हालात में मरना है वह उसी हालात में मरेगा चाहे वह मौत को टालने के लिए कुछ भी करे।

कश्मीर की लड़ाई में जाने की मेरी बारी नहीं थी। एक आदमी ने मुझसे प्रार्थना की कि उसके बच्चे छोटे हैं और वह मौत से डरता है अगर उसकी जगह मैं लड़ाई में चला जाऊँ तो वह मेरा आभारी होगा। मैंने उस आदमी से कहा कि मैं तेरी जगह लड़ाई में जाने के लिए तैयार हूँ। उस समय कमांडर इस तरह की अदला–बदली नहीं कर रहे थे। मैंने कमांडर से कहा, ''मैं मौत से नहीं डरता फिर आप मुझे क्यों रोक रहे हैं? आपको लड़ाई में जाने के लिए एक आदमी चाहिए जिसके लिए मैं तैयार हूँ।''

मैं उस लड़ाई में गया और मुझे कुछ नहीं हुआ। एक बार हमारी कंपनी को दुश्मनों ने घेर लिया उस समय मेरी पीठ पर वायरलैस सेट था, एक गोली वायरलैस सेट के नीचे से निकल गई लेकिन वह गोली न वायरलैस सेट को लगी और न मुझे ही लगी। उस समय जो कुछ हुआ मैं उससे डरा नहीं, मैंने अपना काम जारी रखा। मैं जिस आदमी की जगह लड़ाई में गया था, वह आदमी जब अपने घर गया, उसे हैजे की बिमारी हुई और वह कुछ दिन बाद ही मर गया। मेरी समझ में यही आया है कि मौत के बारे में सोचना मन की कमजोरी है।

हमें अपने मन को सिमरन में लगाना चाहिए। सिमरन हमारे मन को मजबूत बनाता है। हमारा मन मजबूत होगा, हमारे पास मन की शक्ति होगी तो हमें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि हमारे साथ क्या होगा, हमें मौत किस तरह आएगी तो हम खुशी से मौत का सामना करेंगे।

कुछ महीने पहले मुम्बई से दिल्ली आने वाला एक हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हुआ जिसमें कई लोग मर गए। एक प्रेमी मेरे पास आया उसे पता था कि मैं हवाई जहाज से मुम्बई जा रहा हूँ तो उसने मुझे ट्रेन से जाने की सलाह दी। उसके एक हफ्ते बाद हमने समाचार सुना कि एक ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त हो गई है उसमें बहुत से लोग मर गए हैं। मैंने उस प्रेमी से पूछा, ''अब मैं क्या करूँ?''

मैंने उस प्रेमी से कहा कि जिन लोगों को हवाई जहाज की दुर्घटना में मरना था वही लोग उस हवाई जहाज में सफर कर रहे थे। जिन लोगों को ट्रेन दुर्घटना में मरना था वही लोग उस ट्रेन में सफर कर रहे थे। जिसे जिस हालात में मरना है वह उसी हालात में मरेगा।

जब हम पहले टूर पर जा रहे थे तो पप्पू ने मुझे हवाई जहाज में सीट बाँधने और सीधा बैठने के लिए कहा। जब पप्पू मुझे यह सब बता रहा था उस समय वह खुद डरा हुआ था। मैंने पप्पू से कहा, ''तुम डरो मत। तुम्हें मेरी चिन्ता करने की जरुरत नहीं क्योंकि मैं कई बार हवाई जहाज में बैठा हूँ और आर्मी में रहते हुए मैं पैराशूट से भी कूदा हूँ।''

मैं कई बार आपको राजस्थान की यह कहानी सुनाया करता हूँ कि यहाँ का एक आदमी अरब देश गया। उसने पहले खजूर का पेड़ नहीं देखा था, वह खजूर के पेड़ पर चढ़ गया। ऊपर पहुँचकर उसने जमीन की तरफ देखा तो वह बहुत डर गया कि मैं नीचे गिरा तो मर जाऊँगा।

उस आदमी ने अपने गुरु के आगे फरियाद की, ''हे गुरुदेव! मुझे बचा लें मेरी मदद करें अगर आप मुझे सही सलामत नीचे उतार देंगे तो मैं आपके आश्रम में सौ चादरें दान दूँगा।'' गुरु को याद करते हुए उसने नीचे उतरना शुरू कर दिया। जब वह आधा नीचे उतर आया उसने देखा कि फासला कम रह गया है तो उसने सोचा कि सौ चादरें दान देने की क्या जरुरत है, पचास चादरें ही बहुत हैं। इस तरह वह जैसे–जैसे नीचे उतरता गया चादरों की गिनती कम करता गया।

जब वह सही सलामत नीचे उतर आया और बाजार में चादरें खरीदने गया तो उसने सोचा बीस–तीस चादरें लेने की क्या जरुरत है? मैंने देखा है कि आश्रम में बहुत चादरें हैं आखिर उसने एक चादर खरीद ली और अपने गुरु के पास गया। उसने गुरु को बताया कि उसके साथ क्या हुआ और कैसे आपने मेरी मदद की। उस आदमी ने अपने गुरु से कहा कि

मैं आपके लिए यह चादर लाया हूँ। उसके गुरु ने कहा, ''तुम यह चादर अपने बच्चों के लिए घर ले जाओ।'' उस आदमी ने कहा, ''गुरु जी! आप यह चादर ले लें क्योंकि मैंने सौ चादरें दान देने की सोची थी लेकिन मैं एक ही चादर लेकर आपके पास आया हूँ अगर आप इसे स्वीकार नहीं करेंगे तो मैं नहीं जानता कि मेरा मन क्या करेगा?''

उस प्रेमी को खजूर के पेड़ पर चढ़कर गुरु को याद करने का मौका मिला उसी तरह आप लोग हवाई जहाजों में घूमते हैं और आपको बहुत मौके मिलते हैं। जब आप नीचे देखें और आपको लगे कि आपका जहाज दुर्घटनाग्रस्त होने वाला है तब आप ऐसी भेंट के बारे में सोचने की बजाय सिमरन करना शुरू कर दें। सिमरन आपको ताकत देगा, आप कभी मौत से नहीं घबराएंगे।

एक प्रेमी– *अगर किसी सतसंगी को दोबारा जन्म लेना पड़े तो क्या वह दूसरे जन्म में भी सतगुरु को याद रखता है?*

बाबा जी– सतगुरु की ज्यादा से ज्यादा यही कोशिश होती है कि सेवक को दूसरा जन्म न दिया जाए। इसी जन्म में उसे साफ करके ले जाया जाए अगर कोई ऐसा कारण बन जाए तो उसका अगला जन्म अच्छा होता है, उसके ख्याल अच्छे होते हैं लेकिन उसे गुरु जरूर मिलता है। उसके अंदर पहले जन्म से ज्यादा तड़प होगी। हर सतसंगी के अंदर पक्का विश्वास होना चाहिए कि मैंने दोबारा इस जलती–बलती दुनिया में जन्म नहीं लेना। गुरु इसी जन्म में मेरा बेड़ा पार करे।

सुंदरदास, महाराज सावन सिंह जी का बड़ा अच्छा अभ्यासी सेवक था। वह काफी समय मेरे पास रहा। वह सवा सौ मील पैदल चलकर महाराज सावन सिंह जी के दर्शन करने जाता था। वह अपने गुरु के पास कभी बस, गाड़ी से नहीं गया। एक आदमी ने उसे सलाह दी, ''सुंदरदास! तू साईकिल चलानी सीख ले।'' वह मेहनती आदमी था, उसने कहा,

''भगवान ने टाँगे चलने के लिए दी हैं न कि साईकिल चलाने के लिए।'' उस आदमी ने कहा कि तू धर्मराज को क्या जवाब देगा? सुंदरदास ने कहा, ''मेरा धर्मराज के पास क्या काम? मेरा सतगुरु पूरा है। महाराज सावन सिंह जी मुझे लेने आएंगे।''

जिस समय सुंदरदास ने चोला छोड़ा उस समय सैंकड़ो आदमी मौजूद थे। उसने संसार छोड़ने से दो तीन घंटे पहले ही बता दिया था कि मेरी तैयारी है, प्रशाद कर दें। हमने प्रशाद किया बाद में उसने चोला छोड़ दिया। हमें भी सुंदरदास की तरह भरोसा रखना चाहिए कि हमारा धर्मराज और दूसरे जन्म से क्या वास्ता?

एक प्रेमी– *सतगुरु हमें जिस ढंग से जीने के लिए सिखाते हैं, हम उस ढंग से जीने के लिए इच्छा शक्ति कैसे बढ़ाएं?*

बाबा जी– हमें ज्यादा से ज्यादा गुरु के हुक्म की पालना करनी चाहिए। हमारे अंदर गुरु का डर और प्यार होना चाहिए। हमें अभ्यास करके सिमरन के जरिए अपने ख्यालों को पवित्र करना चाहिए। जिस तरह शरीर के लिए खाना जरुरी है उसी तरह आत्मा के लिए भजन–सिमरन करना भी जरुरी है।

शुरु–शुरु में हमें इच्छा शक्ति को इस तरफ करने में मुश्किल होती है बाद में यही इच्छा शक्ति लोभ में तब्दील हो जाती है। नाम जपने का लोभ पैदा हो जाता है। गुरु से प्यार करने का लोभ हो जाता है। अभ्यासी ज्यादा नींद नहीं लेता। यही सोचता है कहीं मैं सोया न रह जाऊँ मेरा समय न निकल जाए।

***

सतसंगों के कार्यक्रम की जानकारी

धन्य अजायब

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम 03, 04 व 05 जुलाई 2020 का है

जयपुर में सतसंग का कार्यक्रम 31, जुलाई 01 व 02 अगस्त 2020 का है

16 पी. एस. रायसिंह नगर आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम

06 से 12 सितम्बर 2020

02 से 04 अक्टूबर 2020

30, 31 अक्टूबर व 01 नवम्बर 2020

04, 05 व 06 दिसम्बर 2020